International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 6; June 2016; Page No. 27-28

रामायण में मानवीय मूल्य एवं आदर्षवादिता वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता

डॉ0 आभा त्यागी

प्राचार्या वैष्य कन्या ममहाविद्यालय समालखा, पानीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

मूल्य वस्तुतः सद्गुणों के मूल तत्व हैं इस कारण इनकी सोपानात्मकता होती है, इस सोपानात्मकता के सर्वोच्च षिखर पर आत्मभूत परम मूल्य हैं। मूल्य सद्गुणों का आधार स्तम्भ है। यही मूल्य जब संवेदनाओं से जुड़ता है तो मानवीय मूल्य बन जाता है। वेद से लेकर समस्त साहित्य में मानवीय मूल्य निर्धारित किये गये है। सत्य, त्याग, अहिंसा, दया, क्षमा, विपदग्रस्त की रक्षा, न्याय पर चलना, पारिवारिक सम्बन्धों में सदभाव आदि मूल्य मानव मूल्यों के प्रमुख आधार है। महर्षि बाल्मीकि रचित रामायण आर्षकाव्य माना जाता है जिसमें लोक कल्याण की सुरक्षा हेतु जीवन मूल्यों पर आधारित उत्तम आचार–संहिता प्राप्त होती है। रामायण के आदर्ष चरित्रों के माध्यम से हम उनके अन्दर स्थित विषेष गुण एवं आदर्ष जानने और ग्रहण करने के लिए आज भी प्रयासरत हैं, जिससे हमारा तो कल्याण होगा ही, साथ –साथ समग्र मानव समाज का भी परम कल्याण होगा। रामायण मूल्यों का सागर है, ज्ञान का रत्नाकार है, और सत्य इसका हृदय है। महर्षि वाल्मीकि का आदि काव्य रामायण भारतीय आचार, विचार, संस्कार एवं संबंधो का आदर्ष ग्रन्थ है और भारत की चिरंतन भक्ति भावना, ज्ञान भावना तथा मैत्री भावना का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। वाल्मीकि ने मानव मूल्यों में सत्य को सर्वोपरि माना है राजा दषरथ सत्यमार्ग पर आरूढ़ होकर त्रिवर्ग का अनुष्ठान कर अयोध्या का पालन करते थे उनके राज्य में सभी मनुष्य प्रसन्न, धर्मात्मा, निर्लोभी सत्यवादी रहते थे वाल्मीकि ने कहीं सत्य में धर्म को प्रतिष्ठित किया है – 'सत्ये धर्म प्रतिष्ठितम।

धर्म क्या है ? – धर्म यज्ञ है, दान है, तप है, स्वाध्याय है, धार्मिक कृत्य है, सामाजिक दायित्व है पिता–माता, भ्राता, पत्नी, बन्धु–बान्धव सामान्य लोगो के प्रति कर्तव्य है, आचरण है। रामायण में इन सम्बन्धों को कर्तव्यों के माध्यम से इतना महान बना दिया है कि इस महाकाव्य में हिमालय जितने ऊॅचे आदषो और सागर जैसे गम्भीर विचारो का एक साथ समावेष है। इसमें मर्यादा पुरूषोतम राम के रूप में मानवीय मूल्यों का मानवीकरण किया है वे भारतीय मानस–पटल पर राम की एक आदर्ष पुत्र, भाई और राजा के रूप में छवि बनी हुई है। राम का चरित्र हमे व्यक्ति, समाज और परिवार के प्रति कर्तव्यों का उपदेष देता है।

राम माता–पिता की आज्ञा के सामने अपने प्राणो का त्याग करने में तत्पर थे– रामायण में सत्य को परम धर्म कहा गया है, 'सत्य हि परम धर्म है।'

''राम सम्पूर्ण मनुष्यों का मूल हैं धर्म ही इनका अन्तः सार है। धार्मिक मूल्यों का भी समावेष है, धर्म ही संसार का सार है, धर्म के माध्यम मे भारतीय मूल्य परिलक्षित किये गये। राम बनवास जाने के अवसर पर अपने पिता राजा दषरथ से अनुमति लेने और आषीर्वाद प्राप्त करने के लिए पहुॅचते है और कहते है जैसे बह्म ने तप के लिए अपने पुत्रों को वन जाने की अनुमति दी थी वैसे ही लक्ष्मण, सीता सहित मुझे अनुमति प्रदान करे'' यहॉ पुत्र धर्म के माध्यम से एक आदर्ष प्रस्तुत किया गया है 'वैदिक परम्परा का निर्वाह करते हुए दषरथ ने राम को सत्यात्मा' और धर्माभिमना कहा है धर्मज्ञ लोग सत्य को ही परम धर्म मानते है। सत्य को ईष्वर तुल्य माना है क्योकि सत्य से धर्म सदा आश्रय ग्रहण करता है सत्य से बढ़कर कोई परमपद नही है''

''धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्य प्रतिष्ठितम''

रामायण के राम को धर्म का अवतार रूप में चित्रित किया और धर्मात्मा, धर्मवत्सल, सुधार्मिक, धर्मषील, धर्मप्रिय, धर्मज्ञ, आदि शब्दों का राम के लिए प्रयोग किया है।''

धर्म, अर्थ और काम का संपादन करने वाले, कार्यो का अनुष्ठान करते हुए वे सत्य– प्रतिज्ञ नरेष उस अयोध्या पुरी का उसी तरह पालन करते थे जैसे इन्द्र अमरावतीपुरी का'' रामायण मे राम के साथ–साथ राजा दषरथ कौषल्या, देवी सीता, लक्ष्मण, भरत एवं हनुमान आदि समस्त पात्र धार्मिक एवं धर्म के रक्षक थे। राजा की तरफ ब्राहमण भी धर्मज्ञ थे (द्विजास्ते धर्मज्ञा वर्धयन्तों) राम के भाई भरत भी धर्मज्ञ थे (ज्येष्ठानुवर्ती धर्मात्मा)'' भरत की अयोध्या लौटने की प्रार्थना स्वीकार न करके राम अपने धर्म मे हिमालय की भॅाति अविचल रहे।

''धर्मार्थ धर्म–कांक्षी च वनं वस्तुमिहागतः''

रामायण मे क्षमा को स्त्री एवं पुरूष के आभूषण के रूप में वर्णन किया है।

''अलंकारो हि नारीणां क्षमा तु पुरूषस्य वा''

वन जाने से पहले राम ने अपनी माताओं से क्षमा प्रार्थना की कि अनजाने में मुझसे जो अपराध हो गए है। उनके लिए आप मुझे क्षमा कर दे।'' रामायण संदेष देती है कि व्यक्ति का आचरण शुद्ध होना चाहिए रामायण वस्तुतः सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का पात्रो के माध्यम से कालजयी उदाहरण प्रस्तुत करती है। राम को सत्य के प्रतीक, लक्ष्मण को महिमा के प्रतीक तथा भरत को धर्म का प्रतीक कहा। पारिवारिक मूल्य एवं आदर्ष प्रस्तुत करते थे आदर्ष भ्रातृ प्रेम सर्वविदित है। एक स्थान पर श्री राम अपने अनुजो के प्रति अनन्य मातृ–स्नेह को दिखाते हुए कह रहे है– भरत तुम को और शत्रुध्न को छोड़कर यदि मुझे कोई सुख मिलता है तो उसे अग्नि देव जलाकर भस्म कर डाले।

रामायण मे वाल्मीकि ने पितृभक्ति व मातृभक्ति का आदर्ष स्वरूप चित्रित किया है। ''राम कहते है मै इस वनवास रूपी कर्म के द्वारा पिताजी के ही वचन का जो धर्मात्माओं को भी मान्य है, अवष्य पालन करूॅगा।''

पितृ भक्ति का एक उदाहरण– श्री राम अपने पिता को सर्वश्रेष्ठ सम्मान देकर कह रहे है– मै महाराज के कहने से अग्नि मे कूद सकता हूॅ तेज जहर खा सकमा हूॅ, गहन समुद्र मे भी गिर सकता हूॅ महाराज मेरे गुरू, पिता और परम हितैषी है मै उनकी आज्ञा पाकर क्या नहीं कर सकता।''

इस प्रकार रामायण के परिवारिक मूल्य, भ्रातृस्नेह, दाम्पत्य प्रेम, सामाजिक आधार पर मानवीय मूल्य, मित्र–नीति सेवक और स्वामी का सम्बन्ध , व्यक्तिगत मानवीय मूल्य, धार्मिक आचरण, राजनैतिक मूल्य के दर्षन होते है

निष्कर्ष

मानवीय मूल्य शाष्वत, सार्वभौम एवं सार्वकालिक है तथा वर्तमान सन्दर्भ में भी उतने ही उपयोगी है जितने प्राचीन सन्दर्भ में। आज भी इनके सम्बन्ध में चिन्तन एवं इनके आचरण में ढ़ालने की नितान्त आवष्यकता है। इस प्रकार रामायण विष्व का अकेला ऐसा ग्रंन्थ है जिसमे मानवीय जीवन मूल्यों के प्रभावषाली आदर्ष देखने को मिलते है। रामायण में वर्णित तात्कालिक नैतिक मानवीय मूल्यों की वर्तमान में बहुत आवष्यकता है वर्तमान समाज मे जो आतंकवाद, हिंसा आदि अमानवीय कृत्यदिखायी दे रहें है वह वास्तव में मानवीय मूल्यों का ह्रास है रामायण सदृष महाकाव्य के माध्यम से इन मानवीय मूल्यों को फिर से उजागर किया जा सकता है। रामायण वस्तुतः सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का पात्रो के माध्यम से कालजयी उदाहरण प्रस्तुत करती है आज के परिप्रेक्ष्य में आवयकता है इन मानव मूल्यो को उजागर करने की, भारतीय संस्कृति मे छिपे इन मूल्यवान रत्नों की पहचान करवाने की भले ही वैज्ञानिक स्तर पर मानव उन्नति कर रहा है परन्तु आवष्यकता है सत्यनिष्ठ होने की, ईमानदार होने की, सह अस्तित्व की आकांक्षा की तथा मानव मात्र के कल्याण की–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कष्चित् दुःख भाग्यभवेत''

सन्दर्भ सूचीं

1. भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं पतयमपि चार्णवे–वाल्मिकी–रामायण–अयोध्या कांड / 8 / 28,29
2. अयोध्या कांड 14 / 3
3. लक्ष्मणं मां च सीतां च प्रजापति रिवात्यजान्'–वाल्मिकी–रामायण 2,3,4,2,4
4. श्रेय से वृष्ये तात पूनरागम नाथ च अरण्य कांड 57,13
5. आयोध्या काण्ड 34,47
6. रामो विग्रहवान, धर्म, साधु व सत्य पराक्रम अरण्य कांड 37,13
7. धर्मज्ञःसत्य संघष्च शील वान न सूचकः अयोध्या कांड 37,13
8. बाल काण्ड 6,5
9. बाल काण्ड 8,20
10. अयोध्या काण्ड 4,26
11. वाल्मीकि रामायण 17 / 17
12. बाल काण्ड 33 / 7
13. अधोध्या काण्ड 39 / 38
14. अयोध्या काण्ड 97,8
15. अयोध्या काण्ड 105,43
16. अयोध्या काण्ड 18,28, 30
17. ''यद बिना भरत त्वां च शत्रुध्न वापि मानद''
18. भवेन्मम सुखं किंचिद् भस्म तत् कुरूतां षिखी''